2. 'भारत दुर्दशा' एक प्रतीक नाटक है- उदाहरण सहित विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक में चित्रित समस्याओं पर सविस्तार विचार कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का प्रतिपाद्य स्पष्ट करते हुए, इसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' में चित्रित स्त्री प्रश्नों पर सोदाहरण विचार कीजिए।

4. 'कथा एक कंस की' नाटक का केंद्रीय विचार लिखिए। (15)

अथवा

'कथा एक कंस की' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

5. 'उत्सर्ग' एकांकी का मूल भाव सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'तौलिये' एकांकी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1720 **I**

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki
हिन्दी नाटक एवं एकांकी

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) अँगरेराज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।।
ताहू पै महँगी काल रोग बिस्तारी।

दिन दिन दूने दुःख ईस देत हा हा री ।।

सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई ।

हा हा! भारतदुर्दशा न देखी जाई ।।

अथवा

हा! यह वही भूमि है जहाँ साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण चंद्र के दूतत्व करने पर भी वीरोत्तम दुर्योधन ने कहा था, "सूच्यग्र नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" और आज हम उसी भूमि को देखते हैं कि शमशान हो रही है। अरे याहँ की योग्यता, विद्या, सभ्यता, उद्योग? उदारता, धन, बल, मान, दृढ़चित्तता, सत्य सब कहाँ गये? अरे पामर जयचन्द्र! तेरे उत्पन्न हुए बिना मेरा क्या डूबा जाता था? हाय! अब मुझे कोई शरण देनेवाला नहीं। (रोता है) मात; राजराजेश्वरी, विजयिनी! मुझे बचाओ। अपनाए की लाज रक्खो।

(ख) मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है। वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो। हाँ, तुम लोगों को आपत्ति से बचाने के लिए मैं स्वयं यहाँ से चली जाऊँगी।

अथवा

राजनीति! राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक सम्बन्ध है। राजनीति की साधारण छल्नाओं से सफल्नता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परन्तु इस भीषण संसार में एक प्रेम करने वाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है शकराज! दो प्यार करने वाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय ज्योति का निवास है।

(ग) पुरुष वही है जो हत्या करे, रक्तपात में हर्षित हो, हिंसा की हुंकार में जीवन - संगीत ढूँढे। निर्मम, क्रूर, बर्बर, अंधा, बहरा- ऐसा होता है पुरुष। (व्याकुलता से) हम ऐसे पुरुष क्यों नहीं हैं? क्यों हमसे दूसरों का दुख देखा नहीं जाता? क्यों हम दूसरों को कष्ट में देखकर करुणा से भर जाते हैं? क्यों दूसरों की पीड़ा देखकर हमारी आँखों में आँसू आ जाते हैं? क्यों हैं हम ऐसे दुर्बल?

अथवा

मुझे गंदगी से घृणा नहीं, किंतु मैं गंदगी पसंद नहीं करता - बड़ा नाजुक सा फ़र्क है। यदि हमें जीवन का सामना करना है, तो रोज गंदगी से दो-चार होना पड़ेगा, फिर इससे घृणा कैसी? जिन ग़रीबों को तुम अपने बरामदे के फ़र्श पर पाँव न रखने दो, मैं उनके पास घंटों बैठ सकता हूँ।